ISSN: 2347-1611

itivritta

A Multi-disciplinary Peer Reviewed International Journal of History & Culture

Editor:
C.M. Agrawal

Volume-7 Part-I Summer 2019

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहभागिता करने वाली उत्तराखंड की प्रमुख महिलायें

डॉ एम.एस. गोसाई* एवं डॉ. अनुराधा गोसाई**

भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के लगभग 100 वर्षों के शासन में कम्पनी ने भारतीय जनमानस पर जो अत्याचार किए उसकी पहली सशक्त प्रतिक्रिया 1857 की क्रान्ति थी। वी. डी. सावरकर ने इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा। यह विद्रोह समय–समय पर होने वाले छोटे–छोटे विद्रोहों की ही एक वृहद् और व्यापक परिणति थी । इस विद्रोह ने न केवल तात्कालिक व्यवस्था में परिवर्तन किया, अपितु भविष्य में भी भारतीयों को सदैव प्रेरित करता रहा। सन् 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों से युद्ध करने वाली महिलाओं अथवा वीरांगनाओं के नाम सदियों तक याद किए जाते रहेंगे। इसमें महिलाओं द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया गया। रानी लक्ष्मीबाई तथा बेगम हजरत महल ने 1857 की क्रान्ति में क्रमशः झाँसी तथा अवध से क्रान्ति का नेतृत्व भी किया। रानी लक्ष्मीबाई का साथ झाँसी राज्य की कई वीरांगना महिलाओं ने दिया जिनके नाम सुन्दर, मुन्दर, काशीबाई एवं झलकारी बाई आदि हैं। झलकारी बाई जो महारानी लक्ष्मीबाई

*इतिहास विभाग, एस.जी.आर.आर. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
**समाजिक विज्ञान विभाग, एम.पी.जी. कॉलेज, मंसूरी

की महिला सेना की सेनापति थीं और उनकी सूरत महारानी लक्ष्मीबाई से मिलती थी। जब अंग्रेजी सेना ने महारानी लक्ष्मीबाई को युद्ध स्थल में घेर लिया तब झलकारी बाई ने रानी लक्ष्मीबाई को युद्ध स्थल से सकुशल बाहर निकाला और खुद रानी लक्ष्मीबाई बनकर अंग्रेजों से लड़ते–लड़ते शहीद हो गईं। नाना साहब की दत्तक पुत्री कुमारी मैना ने भी 1857 की क्रान्ति में अपने पिता के समान अंग्रेजी कम्पनी के खिलाफ विद्रोह का झण्डा खड़ा किया जिसके कारण अंग्रेजों ने उन्हें कठोर यातनाएं दीं। कानपुर की नर्तकी अजीजन बाई ने मर्दाना वेश धारण कर क्रान्तिकारियों की हरसंभव मदद की। उन्होंने कई महिलाओं को युद्ध कौशल का प्रशिक्षण देकर महिला लड़ाकू टुकड़ी का भी गठन किया। लोकगीतों में वर्णन है कि बांदा की शीलादेवी ने 100 महिलाओं के साथ अंग्रेजों से युद्ध किया। वीरांगना तेजबाई (जालौल की रानी), ग्वालियर की महारानी बैजाबाई, बेगम हुसैनी खातून, रामगढ़ की अवन्तीबाई, आदि वीरांगनाओं की लम्बी फेरिस्त है जिन्होंने 1857 की क्रान्ति के अवसर पर बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और प्राणों की बलि देकर भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को ऐतिहासिक बनाया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रतिभाग करने वाली कुछ प्रमुख नारियों में स्वर्ण कुमारी देवी, सरला देवी, दुर्गा भाभी, भीका जी कामा, एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय, लज्जावंती, अनुसूइया साराभाई, दुर्गाबाई देशमुख, सुचेता कृपलानी, अरूणा आसिफ अली आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। हमारा राज्य उत्तराखण्ड भी स्वतन्त्रता आन्दोलन की आँच से प्रभावित हुए बिना न रह पाया और 1857 के विद्रोह से ही इसकी झलक उत्तराखण्ड राज्य में मिलने लगी।

उत्तराखण्ड में जन–जागरण

राष्ट्रीय स्तर पर जहाँ एक ओर 1917 में एनी बेसेन्ट, 1925 में सरोजिनी नायडू और 1933 में नलिनी सेनगुप्ता आदि महिलाएं कांग्रेस अधिवेशनों की अध्यक्ष बनीं, वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य महिलाओं ने अपनी रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया जैसे मैडम कामा,

दुर्गा भाभी, अरूणा आसफ अली, कल्पना दत्त तथा प्रकाशवती आदि। राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के आगमन का प्रभाव उत्तराखण्ड की महिलाओं पर भी पड़ा और परिणामस्वरूप यहाँ की महिलाओं ने ब्रिटिश राज द्वारा लगाये वनों में प्रतिबंध तथा कुली बर्दायस्त का विरोध आरम्भ किया। वनों में आग लगाने जैसे कार्यों में महिलाएं शामिल होने लगीं। चनौदा गांव की दुर्गा देवी को थकलोड़ी वन में आग लगाने के कारण एक महीने की सजा सुनाई गई। धीरे–धीरे महिलाओं में अपनी जीविका के स्रोत में हस्तक्षेप होते देख अंग्रेजी नीतियों के विरोध की भावना प्रबल होती चली गई। अल्मोड़ा क्षेत्र की महिलाएं दिन भर तो कृषि कार्यों एवं घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन करतीं एवं रात में एकत्रित होकर राष्ट्रीय हलचलों की जानकारी आदान–प्रदान करतीं। सामाजिक उत्सवों में पारम्परिक गीतों को न गाकर राष्ट्रीय भावना को जगाने वाले गीत गाने लगीं। राष्ट्रीय आन्दोलनों से सम्बन्धित जनसभाओं में भी हिस्सा लेने लगीं। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से क्रान्तिकारियों की मदद करने लगीं। यद्यपि इस कार्य को करने के लिए उन्हें समाज द्वारा प्रताड़ना भी सहनी पड़ी।

देहरादून क्षेत्र में सन् 1920 में हुए प्रथम राजनैतिक सम्मेलन ने यहाँ की महिलाओं में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस सम्मेलन का आयोजन पं. जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें लाला लाजपत राय, जगतगुरु शंकराचार्य, डॉ सैफुद्दीन किचलु, सत्यवती आदि महान नेताओं ने प्रतिभाग किया। महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी सुनिश्चित कराने के लिए इस सम्मेलन में महिलाओं की सभा का भी आयोजन किया। इस सम्मेलन में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया तथा लखनऊ से आई सत्यवती के हृदय को द्रवित करने वाले भाषण ने महिलाओं को राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित किया। गांधी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन में उत्तराखण्ड की महिलाओं ने शराब की दुकानों पर धरना–प्रदर्शन किया। हाथों में झंडा लेकर अंग्रेजी शासन के विरोध में नारे लगाकर असहयोग आन्दोलन में अपनी भागीदारी दी। अब महिलाएं भी पुरुषों

के समान सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वयंसेवकों के रूप में अपने नाम देने लगीं। वे प्रतिदिन जुलूस निकालतीं, सभाएं करतीं तथा घर–घर जाकर अन्य महिलाओं को भी आन्दोलन में भागीदारी करने हेतु जागरूक करने का प्रयास करतीं।

16 अक्टूबर, 1929 को देहरादून में आयोजित तीसरे राजनैतिक सम्मेलन के अवसर पर महात्मा गांधी का देहरादून क्षेत्र में आगमन हुआ। इस समय तक महात्मा गांधी अपने त्याग, आत्म बलिदान एवं नारी मुक्ति दाता के रूप में महिलाओं के बीच संत के समान लोकप्रिय हो चुके थे। इस सम्मेलन में गांधी जी ने महिलाओं की विशाल सभा का आयोजन किया जिसमें 5000 के लगभग महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इसमें गांधी जी ने उनको स्वदेशी वस्त्र खादी पहनने और चरखा चलाने का उपदेश दिया। गांधी जी को महिला सभा की तरफ से 700.00 रू. भेंट किए गए।

राष्ट्रीय स्तर पर गांधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन से संयुक्त प्रान्त का पर्वतीय अंचल भी अछूता नहीं रहा। उत्तराखण्ड में सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थानीय समस्याओं के विरूद्ध चलाया गया। लगान, शराबबन्दी, झंडा सत्याग्रह तथा स्वदेशी वस्तुओं हेतु आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया गया। राष्ट्रीय स्तर पर नमक आन्दोलन में सरोजिनी नायडू, स्वरूपरानी नेहरू, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू आदि की गिरफ्तारी ने पर्वतीय क्षेत्र की महिलाओं में भी जोश भर दिया तथा उन्होंने संगठित होकर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई और सत्याग्रह में खुलकर प्रतिभाग करने लगीं। उन्होंने अछूतोद्धार, खादी प्रचार, नशाबन्दी आदि में भाग लिया। ये सत्याग्रही महिलाएं जेल जाने से भी नहीं डरीं। इन आन्दोलनों द्वारा महिलाओं के साहस व आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।

जैसे–जैसे आन्दोलन ने जोर पकड़ा वैसे–वैसे महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ती गई। महिलाओं ने स्वयं को संगठित करने के उद्देश्य से स्त्री संघों की स्थापना की। धीरे–धीरे महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में बढ़ती सक्रियता के कारण महिलाओं को महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी सौंपी जाने

लगीं। इसी क्रम में दुर्गा देवी को म्युनिसिपल बोर्ड, अल्मोड़ा के उपाध्यक्ष पद पर तथा बिसनी देवी साह को कुमाऊँ में ग्राम सुधार कार्यों के संदर्भ में संगठनकर्ता का उत्तरदायित्व सौंपा गया। शोभावती मित्तल को जिला कांग्रेस कमेटी, नैनीताल का उपाध्यक्ष पद के लिए चुना गया।सरस्वती देवी को कांग्रेस से रचनात्मक कार्यक्रमों की कमेटी का कार्य सौंपा गया।सन् 1937 में उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्यता लिए कांग्रेस प्रत्याशी शर्मदा त्यागी राज्य की प्रथम एम.एल.ए. बनीं।

1941–42 के राष्ट्रीय आन्दोलनों में उत्तराखण्ड की स्त्रियाँ सर्वस्व समर्पण की भावना से कूद पड़ीं। 1941 में देहरादून की महिलाओं ने युद्ध विरोधी नारे लगाते हुए सत्याग्रह किया जिसके फलस्वरूप उन्हें कठोर कारावास की सजा दी गई। 1942 का वर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण वर्ष रहा। गांधी जी द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन के लिए 'करो या मरो' का नारा सम्पूर्ण देश के लिए एक महामंत्र बन गया। उत्तराखंडी महिलाओं को आन्दोलनकारियों की मदद करने, हड़तालों, जुलूसों आदि में प्रतिभाग करने के कारण गिरफ्तार किया गया। विद्या देवी को सरकारी सम्पत्ति की तोड़फोड़ करने के कारण 15 वर्ष की सजा हुई। गांधी जी की अंग्रेजी शिष्या सरला बहन ने सालम, लोहारखेत, सल्ट एवं चौखुटिया के गांव–गांव जाकर लोगों को राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति जागृत किया। उन्होंने महिलाओं को भी एकजुट करने का प्रयास किया और स्वयं भी राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया। 09 अगस्त, 1943 को भारत छोड़ो आन्दोलन की प्रथम वर्षगांठ में कर्मठ व वरिष्ठ महिला नेता श्यामा देवी ने दर्शनी गेट में कांग्रेस का तिरंगा झण्डा फहराया। स्वतंत्रता संग्राम में अपना बहुमूल्य योगदान करने वालों का साहस, त्याग व बलिदान सफल हुआ। सरोजिनी नायडू ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रेडियो में भाषण देते हुए उन लाखों वीरों को याद किया जिन्होंने देश को स्वतंत्रता दिलाने में अपना बलिदान दिया। उन समस्त नारी शक्ति का जो असीम साहस तथा निडरता के कारण माँ काली के समान बल और शक्ति की देवियाँ बन गई थीं और उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को आजाद

हुआ। स्वतंत्रता आन्दोलन में यद्यपि उत्तराखण्ड राज्य की भागीदारी अपेक्षाकृत देर से नजर आई, किन्तु जब आई तो यहाँ की मातृशक्ति ने उसमें अभूतपूर्व भागीदारी की। उन महिलाओं में से अधिकतर का हम नाम तक नहीं जानते हैं, इस शोध–पत्र में विभिन्न स्रोतों से जिन महिलाओं की जानकारी प्राप्त हो सकी उनका संक्षिप्त विवरण निम्न है–

1.कृष्णा देवी

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की महान स्वतंत्रता सेनानी कृष्णा देवी देहरादून के थानों क्षेत्र की रहने वाली थीं। इनके पति ब्रह्मदत्त शर्मा भी महान स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने पति के साथ स्वतंत्रता संघर्ष में उत्साहपूर्ण भागीदारी की। इस संघर्ष में भागीदारी के फलस्वरूप उन्हें कई बार जेल की यात्राएं करनी पड़ीं। यहाँ तक की 1940 में विदेशी कपड़ों की होली और शराब की दुकानों के बाहर धरना प्रदर्शन करते हुए पुलिस द्वारा जब इनको गिरफ्तार किया गया, तो यह छह महीने गर्भ से थीं। मजिस्ट्रेट ने इनकी गर्भावस्था को देखते हुए इन्हें अंग्रेजी सरकार के पक्ष में माफीनामा लिखने को कहा जिससे इन्हें जेल से रिहा कर दिया जाए। किन्तु इन्होंने असीम साहस और धैर्य के साथ माफीनामा लिखने से इन्कार कर दिया जिसके कारण इन्हें 06 महीने की सजा सुनाई गई और चुनार जेल भेज दिया गया। वहीं जेल में जन्माष्टमी के दिन पुत्र (राम प्रताप) को जन्म दिया। 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भागीदारी करने के कारण पुनः उन्हें अपने पुत्र के साथ गिरफ्तार किया गया। स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करने के परिणामस्वरूप ये कई बार जेल गईं। पं. जवाहर लाल नेहरू ने कृष्णा देवी के देश के प्रति बलिदान की भावना को देखते हुए कहा कि जिस देश में ऐसी नारियां हैं, वह देश कभी गुलाम नही रह सकता। आजादी मिलने के बाद जब कई लोग अपने संघर्ष के बदले भारत सरकार से पेंशन आदि के लिए आवेदन कर रहे थे, तब आपके पुत्र राम प्रताप ने आपसे भी पेंशन आवेदन करने के लिए कहा तो आपने कहा हमने जो भी संघर्ष किया अपनी भारत माता को आजादी दिलाने के लिए किया और अपनी माँ के लिए किये गए काम की कोई कीमत नहीं होती।

2. चन्द्रावती लखनपाल

परम विदुषी स्वंतत्रता सेनानी चन्द्रावती लखनपाल ने 1930 के आन्दोलन में सहारनपुर शहर के लोगों में स्वदेशी वस्तुओं व शराबबन्दी के प्रति चेतना जागृत की। वे 1932 में प्रान्तीय कांग्रेस के राजनैतिक सम्मेलन में प्रतिभाग करने आगरा पहुँचीं और धारा–144 लागू होने के बावजूद सम्मेलन की अध्यक्षता की जिसके फलस्वरूप इन्हें एक वर्ष की जेल हुई। वे 1938 से 1941 तक महादेवी कन्या गुरुकुल पाठशाला इण्टर कालेज, देहरादून में प्रधानाचार्या पद पर तथा 1945 से 1952 तक कन्या गुरुकुल, देहरादून के आचार्य पद पर नियुक्त रहीं। चन्द्रावती उच्चकोटि की साहित्यकार एवं समाज सेविका थीं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण 1952 से कांग्रेस कार्यकर्त्री के रूप में दस वर्ष तक राज्यसभा की सदस्या रहीं। स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने एवं असहाय महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु इन्होंने स्वयं के धन से 1964 में एक ट्रस्ट स्थापित किया।

3. भगवती देवी त्यागी और प्रेमा देवी

सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान भगवती देवी स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल व विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार हेतु विदेशी चीजें बेचने वाले दुकानों के बाहर धरना–प्रदर्शन करती थीं तथा दुकान के अन्दर जाने वाले ग्राहकों से विदेशी कपड़ा न खरीदने की अपील करतीं। इस कार्य में इनका साथ इनकी छोटी पुत्री प्रेमा देवी भी देती थी। इस कार्य को करने के कारण दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत ने इन्हें तथा इनकी पुत्री को साढे चार महीने का कारावास व 50 रु. जुर्माना और जुर्माना न देने पर 06 सप्ताह की अतिरिक्त कारावास की सजा दी। बाद में दोनों को लखनऊ कैम्प से रिहा किया गया।

4. यज्ञवती एवं यशोदा देवी

गांधी जी ने सन् 1930 में नमक कानून तोड़ने के साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया तो देशभर में सत्याग्रहियों द्वारा जुलूस, जनसभाएं तथा धरना प्रदर्शन कार्यक्रम संचालित किए गये। ऐसी ही एक घटना 16 नवम्बर, 1930 को देहरादून की है जिसमें जिलाधिकारी की धारा 144के बावजूद बार काउंसिल के निर्देश पर 16 नवम्बर, 1930 को 'जवाहर दिवस' मनाया गया। इसमें यज्ञवती और यशोदा देवी ने अन्य लोगों के साथ धारा–144 का उल्लंघन कर देहरादून के पल्टन बाजार में जुलूस निकाला तथा जनसभाएं आयोजित कीं। इसके कारण पुलिस द्वारा यज्ञवती एवं यशोदा देवी को गिरफ्तार किया गया जिन्हें 03 मास कठोर कारावास व 25 रु. जुर्माना की सजा दी गई। इन्होंने महात्मा गांधी को पिता मानकर देश की सेवा में अपना जीवन समर्पण किया। इस प्रकार का त्याग निश्चय ही देवभूमि की महिलाओं को इतिहास में उच्च स्थान प्रदान करता है।

5. रामलुभाई और उमा देवी

महान स्वतंत्रता आन्दोलनकारी रामलुभाई देवी ने 1930 के आन्दोलन में सक्रियता के साथ प्रतिभाग किया तथा अपने दो छोटे बच्चों के साथ विदेशी माल बेचने वाले दुकान के आगे धरना–प्रदर्शन करते हुए पकड़ी गई। वरिष्ठ कर्मठ कांग्रेसी नेता राम स्वरूप की धर्मपत्नी उमा देवी को भी 1941 में सहारनपुर के डूंगा गांव में युद्ध विरोधी नारे लगाने व ब्रिटिश सरकार विरोधी गतिविधियों में भाग लेने के कारण पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। दोनों महिलाओं को चार माह का कठोर कारावास दिया गया।

6. श्यामा देवी

स्वतंत्रता सेनानी श्यामा देवी का जन्म गढ़वाल के चमोली जिले में हुआ। सन् 1930 के आन्दोलन में उन्होंने देहरादून में एस्लेहॉल बिल्डिंग की दुकानों पर धरना दिया व ग्राहकों को दुकानों में जाने से रोका। पुलिस ने उनको गिरफ्तार किया। 1941 को श्यामा देवी देहरादून के हनुमान चौक पर युद्ध विरोधी नारे लगाने और सत्याग्रह करने पर अदालत द्वारा 01 वर्ष कारावास की सजा सुनाई गई। सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के अवसर पर महिलाएं आन्दोलनों में ज्यादा से ज्यादा संख्या में संगठित होकर प्रतिभाग कर सकें, इस उद्देश्य से श्यामा देवी अपने बेटे ब्रजभूषण को पीठ

सन्दर्भ

1. डबराल, शिवप्रसादः उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग–8, दोगड्डा गढ़वाल, वीरगाथा प्रकाशन, 2035
2. नेगी, कुंवर सिंहः 'कर्मठ', गढवाल मण्डल की जानी मानी दिवंगत विभूतियां, भाग–2, कोटद्वार
3. पाठक, शेखरः उत्तराखण्ड में कुली बेगार प्रथा, नई दिल्ली, राधा कृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 1987
4. दर्शन, भक्त, गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां, देहरादून सरस्वती प्रेस, 1980, पृ. 415–418
5. पंजानी, मनोजः स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं देहरादून, समय साक्ष्य, (जुलाई–सितम्बर, 2015),
6. गुसांई, मेहरबान सिंह : अनुराधा, उत्तराखण्ड का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, लखनऊ, 2015,
7. बिष्ट, सुरेन्द्र सिंह : हिमालय में उपनिवेशवाद और पर्यावरण, देहरादून, एलाइड प्रिन्टर्स, 2007
8. धस्माना, योगेशः उत्तराखण्ड में जन जागरण और आन्दोलनों का इतिहास, देहरादून, विनसर पब्लिशिंग क., 2006
9. वैष्णव, ललिता चन्दोला, गढ़वाल के जागरण में गढ़वाली पत्र का योगदान (1905–1913), देहरादून, पं. विश्वम्भर दत्त चन्दोला एवं नेगी, कुंवर सिंह 'कर्मठ', गढवाल मण्डल की जानी मानी दिवंगत विभूतियां, भाग–2, पूर्वोक्त,
10. ठाकुर, प्रताप सिंहः (सम्पादक), स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, जिला देहरादून, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, 1970 पृ. 4334.युगवाणी, 24 जून, 1973